

संगीत जगत् की विख्यात विभूतियों को शत-शत नमन



संगीत विभाग

डॉ. इतिरिंह गौर विभागविद्यालय, सागर न.प्र.
(संस्कृत विश्वविद्यालय)

Phn- 07562-265831

E-mail : musiconsgsu@gmail.com



ND PUBLICATION

Badapur South East Delhi 110044

www.ndpublication.com

ISBN

978-81-934037-8-5



तबला साहित्य-कल्पना एवं सौंदर्य

डॉ. राहुल स्वर्णकार

संनित कलाओं के अन्तर्गत तबला गान को सर्वोच्च स्थिति में समानता का अपना अलग महत्त्व है, जिसमें गायन, वादन, नृत्य आदि का समान रूप से स्थान प्राप्त है। यहाँ मात्र तबला वादन में संवादन और इबारत में बंधा करेगा। ऐसा कि नगदोदय है कि तबला वादन में वादकों में प्रभाव है, संगीत और एकल वादन, दोनों ही आपसी में अन्तर्गत समान स्थान है। कला वादन या वादन संगत में कोई तबला वादक, संगीत का अन्तर्गत ही भूत रूप नहीं दे सकता। प्रत्येक कला का अपना एक अलग ही अन्तर्गत ही अन्तर्गत ही है, जिसके अन्तर्गत में किसी संगीतकार का मात्र संगीतकार, वादन अन्तर्गत होता है, किन्तु इसका आशय यह कदापि नहीं समझाया जा सकता कि वादकों का जीवन का पूर्ण रूप से पालन किया जाए। कल्पना और वादन में रूप नहीं है कि इसमें किसी न-किसी विचारधारा का होना आवश्यक है। तबला और उसमें जुड़ी वादन सामग्री का अपना विशिष्ट और बृहत् साहित्य है, जिसके विचारधारात्मक परिपालन उपराल साहित्यानुभावि सौंदर्यानुभावि में बदल सकते हैं। तबला का संबंध विचारों व भाव मनुष्य के जीवन का और भावों में भी है, विचारों की अन्तर्गत भाषा के बिना नहीं हो सकती। तब व जीवन कलाएं जीवन भाषा का प्रयोग नहीं होता विचारधारा के रूप में नहीं गिनी जा सकती। पूर्वजों एवं वादकों में प्राप्त रचनाओं (मौखिक अथवा लिखित) को जिस प्रकार के वर्णों का प्रयोग करके रखा गया है, उनका अन्तर्गत से प्राप्त भाषा जैसी का अद्भुत सम्मिश्रण करके प्रस्तुत किया गया है, जो कि व्याख्याती जैसी की और समित करती है। "व्याख्या का जिनका गहरा संबंध अन्तर्गत से होता है, उनका ही भावी स्थान से भी। इस प्रकार वर्तमान, भविष्य और अन्तर्गत के साथ साहित्यकार का जिनका अनिष्ट संबंध होगा, उसकी रचनाओं जितनी ही महान होगी।" आशय इसी